

क्लाइमेट चेंज से जंग, भारत के हाथ क्या लगा



कीर्तिवर्धन सिंह

अथर्ववेद में कहा गया है कि पृथ्वी हमारी माता हैं और हम उनके बच्चे हैं। भारतीय दर्शन और जीवन शैली हमेशा से प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की संकल्पना के साथ जुड़ी रही है। भारत प्रकृति को पूजता भी है और इसके अनुसार उत्सव भी मनाता है।

एक पेड़ मां के नाम | पिछले दस वर्षों के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध लड़ाई में स्पष्ट रूप से विश्व का नेतृत्व करता हुआ दिखाई दे रहा है। हाल ही में पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री ने 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान की शुरुआत की। आज इस अभियान से देश का जन-जन जुड़ा हुआ महसूस कर रहा है और यह अभियान एक जनांदोलन का रूप लेता दिखाई पड़ रहा है।

सरल समाधान | हमारी सरकार देश-विदेश के सभी मंचों से पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखा चुकी है। ग्लासगो में हुए COP 26 में प्रधानमंत्री ने Lifestyle

for Environment (LiFE) का अनूठा विचार प्रस्तुत किया। भारत मानता है कि जलवायु कार्रवाई व्यक्तिगत स्तर पर आरंभ होती है और प्रधानमंत्री मोदी ने जलवायु परिवर्तन की जटिल समस्या का एक सरल समाधान उपलब्ध कराया है।

वन्य जीवन | पर्यावरण से जुड़े सभी पहलुओं पर हमारी सरकार ने ध्यान केंद्रित किया है जिसका परिणाम अब दिखने लगा है। न केवल देश में वन आच्छादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है बल्कि पिछले दशक के दौरान बाघों की संख्या भी दोगुने से ज्यादा हो गई है। आज भारत में दुनिया के 75% से अधिक बाघों का वास है। अफ्रीकी चीतों को लाए जाने से भी भारत की वन्य जीवन विविधता को बढ़ावा मिला है। 2023 में 70 वर्षों के बाद यहां चीता शावक पैदा हुआ। यह प्रजाति देश में विलुप्त हो चुकी थी।

लक्ष्य पूरा | जहां एक ओर कई देश अपने जलवायु लक्ष्य को पूरा करने में विफल रहे हैं, वहीं भारत ने अंतिम समय सीमा से पहले ही अपने लक्ष्य को पूरा कर लिया है। उदाहरण के लिए, गैर फॉसिल स्रोतों से संस्थापित विद्युत क्षमता का 40% अर्जित

AI Image



कॉमन रूम

करने का लक्ष्य समय सीमा से 9 वर्ष पहले पूरा कर लिया गया। एथनॉल मिश्रित पेट्रोल के लिए निर्धारित लक्ष्य भी समय सीमा से पांच महीने पहले ही अर्जित कर लिया गया।

गंगाजल की गुणवत्ता | नमामि गंगे कार्यक्रम की बदौलत इस पवित्र नदी के प्रदूषण को सफलतापूर्वक रोक दिया गया और इससे अनगिनत स्थानों पर जल की गुणवत्ता में सुधार दर्ज किया गया। यह लक्ष्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हृदय के करीब रहा है जैसा कि उन्हें प्राप्त उपहारों की नीलामी से हुई समस्त आय नमामि गंगे कार्यक्रम को दान करने के उनके निर्णय से स्पष्ट होता है।

उज्ज्वला स्कीम | प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के चलते कार्बन डायॉक्साइड उत्सर्जन में भी कमी आई है और हजारों करोड़ की बचत भी हुई है। स्वच्छ एवं नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के क्रम में भारत ने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के निर्माण में भी अग्रणी भूमिका निभाई है।

रैंकिंग में सुधार | इस प्रयासों का ही परिणाम है कि वैश्विक स्तर पर हमारी रैंकिंग में भारी सुधार हुआ है। अंतरराष्ट्रीय संस्था जर्मन वॉच का मानना है कि भारत की जलवायु परिवर्तन प्रदर्शन सूचकांक रैंकिंग जो 2014 में 30 थी, अब सुधरकर 2023 में 7वें स्थान पर पहुंच गई है।

एक पृथ्वी, कई प्रयास | विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण भी सरकार की नीतियों में शामिल रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं कि हमारा ग्रह एक है लेकिन हमारे प्रयास कई होने चाहिए - एक पृथ्वी, कई प्रयास। भारत बेहतर पर्यावरण और वैश्विक कल्याण के लिए होने वाले किसी भी प्रयास में सहायता करने के लिए दृढ़ संकल्पित है।
(लेखक केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन तथा विदेश राज्यमंत्री हैं)